डॉ. सरला सिंह 'स्निग्धा'

दिल्ली

कहते सारे लोग हैं, नहीं भला है साथ।
दुर्जन से दूरी भली, नहीं पकड़ना हाथ।
नहीं पकड़ना हाथ, साथ ये कभी न देते।
करते हैं ये घात, प्राण तक ये हर लेते।
दया धर्म से दूर, हमेशा ही ये रहते।
झूठों के सरदार, दुष्ट सब इनको कहते।।

जकड़े माया जाल में, घूम रहे सब लोग।
जान सके कब वे सखी, ये तो है बस रोग।
ये तो है बस रोग, नहीं उलझों जी इसमें।
देखो जीवन पार, सही होता है किसमें।
चार दिनों का खेल, फिरे हो क्यों तुम अकड़े।
माया हैं जंजाल, पड़े जिसमें तुम जकड़े।।

सारी ही चिन्ता सखी, दी मैंने है डाल।
मालिक अब जो भी करे, रखें हमें जिस हाल।
रखें हमें जिस हाल, नहीं कुछ लेना-देना।
उनकी ही पतवार, नाव उनको ही खेना।
उनपर सब कुछ छोड़, बनी मैं तो जी हारी।
रघुवर के अब नाम, छोड़ दी चिन्ता सारी।।

नन्दिता माजी शर्मा

मुम्बई

करती तुमसे याचना, कृपा करो तुम मात।
फलीभूत हो लेखनी , चले कलम दिन रात ।।
चले कलम दिन रात, मात मति दे दो ऐसी।
खुले मनन के द्वार, सोच हो चन्दन जैसी।।
तुम्हीं सुरों की खान, हाथ में वीणा धरतीं।
दो शुभ मति का दान, मात मैं विनती करती।।

तुलसी ने मानस रचा, किया नेक यह काम।
दुविधा सारी मिट गई, जपा राम का नाम।।
जपा राम का नाम, मेघ से निकला दिनकर।
चले कलम को थाम, प्रीति के मोती चुनकर।।
लिया राम का नाम, मोह की माया झुलसी।
कालजयी कर काम, राम को पाते तुलसी।।

मन का बन्धन जोड़ कर, खोलो उर के द्वार।
रामचरित सुमिरन करो, बहे पुण्य की धार।।
बहे पुण्य की धार, नाश हो मद मत्सर का।
पाप का हो हार, पाठ हो जब मानस का।
पीड़ा, संशय, त्रास , दूर हो साधक जन का।
रामचरित का पाठ, दूर कर दे तम मन का।।